4. भूमिगत आंदोलन - बड़े नेताओं की गिरफ्तारी के बाद जय प्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया आदि ने भूमिगत रहकर आंदोलन चलाया। 12.

5. आजाद रेडियो का संचालन : आंदोलन को गति एवं निरन्तरता प्रदान करने के लिये ऊषा मेहता व उनके साथियों द्वारा सूचनाओं के आदान प्रदान के लिये आजाद रेडियो चलाया।

6. समानान्तर सरकारों का गठन - भारत छोड़ो आंदोलन इतना उग्र एवं प्रभावी था कि बलिया के चित्तू पाण्डेय के नेतृत्व में समानान्तर सरकार का निर्माण हुआ। इसी तरह बिहार में भी समानान्तर सरकार का गठन हुआ।

7. गांधी जी का उपवास : अंग्रेजों ने अहिंसा के पुजारी को 'अहिंसा' से हिंसात्मक आंदोलन करने का आरोप लगाया तो गांधी जी ने कहा यह हिंसा ब्रिटिशों द्वारा की गई हिंसात्मक कार्यवाही का परिणाम है।
इस मिथ्या आरोप के चलते गांधी ने 21 दिन का उपवास रखा।

8. नौसेना का विद्रोह - बम्बई के तटवर्ती नौसेना के भारतीय नौसैनिकों ने बगावत कर दिया था।

निष्कर्ष: भारत छोड़ो आंदोलन ने ब्रिटिश शासन व्यवस्था की नींव हिलाकर रख दिया। परिणाम स्वरूप ब्रिटिशों ने भारत को आजादी देने का प्रयास आरम्भ किया।

3 D] क्रिप्स मिशन की विफलता का परिणाम, तथा तत्कालीन द्वितीय वि० युद्ध की परिस्थितियाँ एवं भारत पर जापानी आक्रमण का खतरा एवं अंग्रेजी शासन ने भारत छोड़ो आंदोलन का सूत्रपात किया।

जिसमें गांधी जी के आह्वान पर जनता एवं शासन प्रशासन में कार्यरत भारतीयों का व्यापक समर्थन मिला। कई नेताओं ने आंदोलन में भाग लिया। विद्रोह एवं क्रान्ति एवं गतिविधि चला। फलस्वरूप कई स्थानों में समानांतर सरकारें बनी तथा गिरफ्तारी के उपरांत भी आंदोलन भूमिगत भी चलता रहा। इस आंदोलन में महिलाओं ने व्यापक भागीदारी दिखाई।

भारत छोड़ो आंदोलन के प्रमुख घटनाक्रम निम्न वत है -

1. 1. भारत छोड़ो प्रस्ताव की मंजूरी - कांग्रेस के जुलाई 1942 के वर्धा अधिवेशन में 'प्रस्ताव' को मंजूरी मिली। इस प्रस्ताव को कांग्रेस कार्य समिति ने स्वीकार किया।

2. बम्बई के ग्वालियर टैंक में 8 अगस्त 1942 को महात्मा गांधी द्वारा समस्त नागरिकों एवं शासन प्रशासन में कार्यरत भारतीयों से आंदोलन में भाग लेने तथा साथ देने का आह्वान किया।

3. ऑपरेशन 'जीरो' ऑवर - ऑपरेशन जीरो ऑवर चलाकर ब्रिटिश सरकार ने आंदोलन के प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया।

गांधी जी सरोजनी नायडू को आगा खां पैलेस में रखा गया। अन्य नेताओं को अलग-2 स्थानों पर रखा गया।

जेम्स द्वितीय के निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी शासन प्रणाली ने जनता में असंतोष एवं आक्रोश का कारण बना। गौरव पूर्ण क्रांति के निम्न लिखित कारण थे-

क्रांति के कारण

राजनैतिक
- निरंकुश शासन प्रणाली एवं दैवीय कारण
- संसदीय शक्ति पर पूर्ण नियंत्रण
- मनमानी व स्वार्थी कार्य

धार्मिक
- चर्च संस्था में पादरियों का प्रभुत्व
- कैथोलिक धर्म का प्रोटेस्टेंट पर प्रभुत्व
- अनाचार एवं रूढ़िवादिता

बौद्धिक व तार्किक कारण
- पुनर्जागरण काल का प्रभाव
- नवीन वैज्ञानिक तर्क एवं विश्लेषणात्मक तर्क
- विचारकों तथा लेखकों का प्रभाव

क्रांति का तात्कालिक कारण: गौरव पूर्ण क्रांति का तात्कालिक कारण जेम्स द्वितीय के पुत्र (विलियम) का जन्म होना। क्योंकि प्रोटेस्टेंट (मार्टिन लूथर किंग) की विचार धारा वाले नाम ऑफ प्रोटेस्टेंट को भय था कि कहीं पुत्र कैथोलिक धर्म अपनाकर राज न करे। उस समय प्रोटेस्टेंटों की नाराजगी समर्थन में ... की तरफ कूच किया। परिणाम स्वरूप राजा ने लोगों की मांग मान ली। इस क्रांति के आधार संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना हुई।

निष्कर्ष: इतिहासकार ट्रेवेलियन ने इसे बिना गर्जना रक्त की क्रांति कहा।

Q. 3.
3 A] मध्य काल से आधुनिक काल की विकास यात्रा में इंग्लैण्ड में हुई 'रक्तहीन' गौरव क्रांति' का महत्वपूर्ण स्थान है। इसने तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन किये। परिणाम स्वरूप नवीन तर्क एवं वैज्ञानिक वाद को बढ़ावा दिया, धार्मिक एवं स्थापित मान्यताओं को - तर्क एवं बुद्धिमत्ता की कसौटी पर परखा गया। तथा स्वाभाविक असमानता की बजाय सामाजिक समता एवं अवसर की समता तथा निरंकुश शासकों के विरुद्ध संवैधानिक - राजतंत्र की स्थापना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गौरव पूर्ण क्रांति के पूर्व इंग्लैंड की स्थिति पर - दृष्टिपात करने से निम्न लिखित स्थितियां प्रकट होती है।

क्रांति से पूर्व की स्थिति :-

1. राजनैतिक क्षेत्र :- इंग्लैण्ड में स्टुअर्ट वंश का निरंकुश शासन था। 1603 - 1689) ई. तक स्टुअर्ट वंश का शासन रहा। जिसमे पूर्ण संसदीय नियंत्रण राज्य क्षेत्र के हाथों में निहित थी।

2. आर्थिक क्षेत्र में :- क्रांति से पूर्व इंग्लैंड की अर्थव्यवस्था कृषि आधारित थी। कृषिगत भूमि छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त थी। किसानों पे कर का भार - अत्याधिक, तथा सामंती व्यवस्था का अन्याय शोषण का शिकार किसान एवं मजदूर वर्ग था।

3. धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र :- इंग्लैंड में ईसाई धर्म - की कैथोलिक शाखा का प्रभुत्व स्थापित था। राजा अपने को दैवीय कारणों का सम्बन्ध तथा ईश्वर का प्रतिनिधि मा

4. चौसा एवं बिलग्राम / कन्नौज का युद्ध : इन युद्धों ने भारत से एक बार मुगल सत्ता को समाप्त किया। परिणामत 'सूर वंश' की स्थापना हुई।

5. 1540-1555 ई. तक निर्वासित जीवन हुमायूं को अपनी जीवन रक्षा एवं शासन सुरक्षा का समर्थन प्राप्त करने के लिये ईरानियों का सहारा लेना पड़ा।

6. सरहिन्द का युद्ध : 1555 ई के सरहिन्द के युद्ध ने हुमायूं को उसका खोया राज्य पुनः दिलाया। किंतु 1556 में पुस्तकालय की सीढ़ियों से लड़खड़ाकर गिरने से उसकी मौत हो गई।

स्पष्टतः व्यापक प्रशासनिक एवं राजनीतिक कार्य व्यवस्था के अभाव में हुमायूं का शासन लड़खड़ाता रहा। इसी कारण - इतिहासकारों ने उसे मुगल साम्राज्य का लड़खड़ाता शासक कहा।

2. सती प्रथा का अंत करना।
3. नवीन विचार धारा एवं 'वैज्ञानिक वाद' को बढ़ावा।
4. समाचार पत्रों, पुस्तकों का संपादन लेखन - यथा मिराट-उल अखबार, संवाद कौमुदी आदि।
5. ब्रह्म समाज की विचारों एवं मान्यताओं का प्रचार प्रसार।
6. ब्रिटिश सरकार की सहायता से समाज सुधार संबंधी नियमों एवं कानूनों को लागू करना।

स्पष्टतः तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों के विरुद्ध 'ब्रह्म समाज' ने भरपूर संघर्ष कर देश की सामाजिक चेतना एवं राजनीतिक दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2 b]. मुगल साम्राज्य के विस्तार के क्रम में दूसरे बादशाह पर - बाबर का पुत्र 'हुमायूँ' ने सत्ता संभाली। किंतु - अपनी दूरदर्शिता एवं शासन की कुशल नीतियों के अभाव में वह सत्ता में लड़खड़ाता रहा। उसकी स्थिति अस्थिर रही। हुमायूँ की असफलता के निम्नलिखित कारण हैं -

1. दूरदर्शिता का अभाव :- 1532 ई. के चुनार के अपने प्रथम युद्ध में उसने 4 माह तक किले का घेराव किया। जिसके बाद शेरशाह ने अपनी अधीनता स्वीकार कर ली। इस समयावधि में किंतु उसने उसके सैनिकों को छोड़ दिया।
2. कालिंजर का घेराव - कालिंजर के किले का घेराव कर उसने अत्यधिक समय का व्यय किया। तथा सत्ता प्रशासन की स्थापना करने में असफल रहा।
3. अफगानों का समर्थन न प्राप्त करना, अफगानी शासकों का विश्वास हासिल करने में असफल।

2 G] गयासुद्दीन तुगलक की मृत्यु उपरांत उसका ज्येष्ठ पुत्र 'जौना खाँ' ने मुहम्मद बिन तुगलक की उपाधि धारण की। 'जिया उद्दीन बरनी' द्वारा लिखित 'तारीख-ए-फिरोजशाही' एवं मोरक्को (अफ्रीका) निवासी 'इब्नबतूता' के यात्रा वृतांत एवं उसकी पुस्तक 'किताब-उल-रेहला' से मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल संबंधी जानकारी प्राप्त होती है।

कुशल नीतियों के निर्माण में एवं असफल क्रियान्वयन के कारण सल्तनतकालीन इतिहास में चर्चा का केन्द्र था। उदाहरण स्वरूप जैसे ही उसने दोआब में कर वृद्धि हेतु मुहिम शुरू किया, उसी समय 'अकाल' पड़ गया तथा किसानों में उनके प्रति 'कर आपदा' के कारण असंतोष फैल गया। वहीं आर्थिक क्षेत्र में सुधार हेतु सांकेतिक मुद्रा चलाया। किन्तु केन्द्रीकृत निगरानी प्रणाली के अभाव में असफल साबित रही।

इसके अलावा राजधानी परिवर्तन (देवगिरि) दूर दक्षिण के अभाव में उसका शासन चलता रहा। इतिहासकारों ने उसे तुगलक वंश का सबसे विद्वान मूर्ख कहा।

2 H] भारतीय सामाजिक सुधार के आंदोलन में राजा राममोहन राय का अद्वितीय योगदान रहा है। उनके इन योगदानों के कारण इतिहासकारों ने उन्हें 'भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत' कहा।

उनके द्वारा समाज सुधार हेतु अनेक संस्थाएं एवं पुस्तकों की स्थापना की गई। इन्हीं संस्थाओं में 'ब्रह्म समाज' एक महत्वपूर्ण संस्था थी। 'ब्रह्म समाज' में निम्न कि 'दर्शन' की झलक मिलती है:-

1. मूर्ति पूजा एवं पाखंडवाद का अंत

"इन परिवर्तनों" के अतिरिक्त व्यापार, कृषि संरचना तथा नये उपनिवेशों की निर्माण सम्बन्धी परिवर्तन हुये, जिसने वर्तमान आधुनिक जीवन को सरल, सहज एवं व्यवस्थित किया।

---

2 F] ब्रिटिश नीतियों एवं कार्यों के प्रति आदिवासियों, राजाओं एवं सैनिकों में कृषकों, जमींदारों, पनपता असंतोष 1857 की क्रान्ति का कारण बना।

किन्तु असंगठित एवं सुनियोजन के अभाव में क्रान्ति अपने वांछित लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकी।

क्रान्ति की असफलता के प्रमुख कारण:

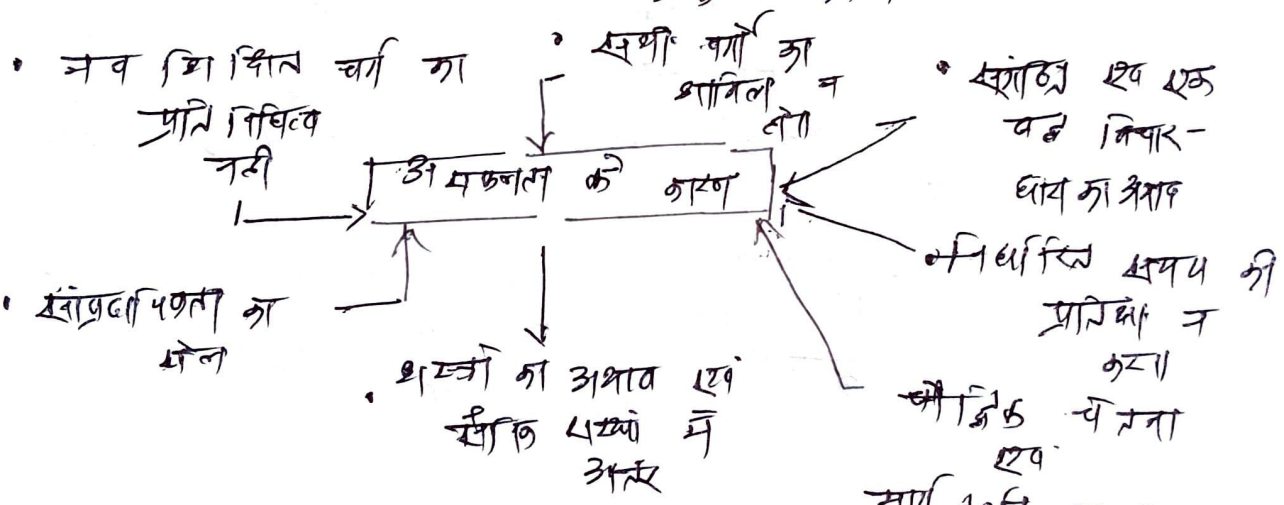

इन प्रमुख कारणों के अतिरिक्त उसका व्यापक विस्तार न होना, राजा महाराजाओं का तटस्थ रहना तथा नवीन युद्ध कौशलों एवं संचार व्यवस्था के अभाव में 1857 की क्रान्ति अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकी किंतु इसने भारतीय समाज एवं तत्कालीन ब्रिटिश शासन में व्यापक परिवर्तन का माध्यम बनी।

2. <u>विश्वास का अभाव</u> :- वह अपने मित्रों तथा सहयोगी पर सहज विश्वास नहीं करता था। जिस कारण उसे असंतोष का सामना करना पड़ता था।

3. <u>साम्प्रदायिक प्रभाव</u> :- वह कट्टर सुन्नी सम्प्रदाय में विश्वास रखता था। तथा अन्य सम्प्रदायों से घृणा करता था।

4. राजपूतों, मराठों तथा बुन्देलों से सम्बन्ध का अभाव

4. भय और हिंसा ने समाज में समस्याओं को जन्म दिया।

इन सब कारणों के अतिरिक्त औरंगजेब की राजनीतिक एवं प्रशासनिक तथा धार्मिक नीतियों के असफलता के कारण मुगल साम्राज्य का पतन हुआ।

---

2 E] पुनर्जागरण के बाद 'औद्योगिक क्रांति' एक महान घटना थी जिसने प्राचीन कृषि आधारित अर्थव्यवस्था ने उद्योग आधारित अर्थव्यवस्था का स्वरूप लिया। औद्योगिक क्रांति के परिणाम निम्नलिखित हैं :-

औद्योगिक क्रांति परिणाम

- **सामाजिक परिवर्तन**
  1. जनसंख्या वृद्धि
  2. श्रमिकों की दयनीय दशा
  3. समाज में नया वर्ग भेद
     - पूंजीपति
     - श्रमिक
     - मध्यवर्ग
- **आर्थिक परिवर्तन**
  1. कपड़ा, लोहा, कोयला उत्पादन में वृद्धि
  2. कुटीर उद्योगों का
  3. बड़े बड़े औद्योगिक नगरों का निर्माण
- **सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिवर्तन**
  1. व्यापक मताधिकार का विकास
  2. समाजवाद का विकास
  3. एकल परिवार की वृद्धि

C] वर्नाकुलर प्रेस अधिनियम (1878) 1857 की क्रांति के उपरांत एक महत्वपूर्ण घटना थी। जिसने विदेशी समाचार पत्रों एवं देशी समाचार पत्रों के मध्य कटुता पैदा की। उस एक्ट को लार्ड लिटन द्वारा लाया गया। जिसका प्रमुख उद्देश्य भारतीय समाचार पत्रों के प्रकाशन तथा सम्पादन को नियंत्रित करना था।

वर्नाकुलर प्रेस अधिनियम के प्रावधान :

1. जिला दण्डनायकों को यह अधिकार मिला कि वे स्थानीय सरकार की आज्ञा से किसी भारतीय भाषा के समाचार-प्रकाशक या मुद्रक को बुलाकर 'बंधपत्र' पर हस्ताक्षर करने के लिये कह सकते है।
2. दण्डनायक का निर्णय अंतिम तथा अपील रहित
3. देशी समाचार पत्रों को कार्यवाही से बचने हेतु अपने समाचार पत्र का प्रवेक्षण भेजना अनिवार्य कर दिया गया।

स्पष्ट रुप से यह कहा जा सकता है कि इस एक्ट ने ब्रिटिश आलोचना के विरुद्ध भारतीय समाचार पत्रों नियंत्रित करना। इसलिये इस अधिनियम को 'मुंह बंद करने वाले अधिनियम' की संज्ञा दी जाती है।

---

2 D] भारत में मुगल कालीन साम्राज्य की स्थापना 1526 में 'बाबर' द्वारा की गई। यह साम्राज्य हुमायुं अकबर जहांगीर तथा शाहजहां के काल में परवान चढा और औरंगजेब की नीतियां एवं स्वभाव तथा उसके बाद अयोग्य उत्तराधिकारियों के कारण मुगल साम्राज्य का पतन हुआ

मुगल साम्राज्य के पतन में औरंगजेब की भूमिका निम्न

1. धार्मिक स्वभाव : भारत जैसे विविध धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताओं वाले देश में उसने मुस्लिम धर्म की मान्यताओं से और अतिरिक्त अन्य धर्मों एवं समाज, की मान्यताओं में अंतर रखता था।

L] 'तुलुगमा' एक युद्ध नीति, जिसे बाबर ने उजबेकों से सीखी तथा 'पानीपत के प्रथम युद्ध (1526)' में प्रयोग कर विजय प्राप्त किया।

M]. हैदर अली 'मैसूर' का राजा था। प्रथम आंग्ल - आंग्ल युद्ध में ब्रिटिशों को पराजित किया।

N] दांडी मार्च का आरंभ 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से हुआ तथा 6 अप्रैल 1930 को दांडी में नमक बनाकर गांधी ने नमक कानून को तोड़ा।

---

2 A]. किसी भी क्रांति के पूर्व 'बौद्धिक क्रांति' का होना आवश्यक माना जाता है। बौद्धिक क्रांति द्वारा क्रांतिकारियों में प्रेरणा, उत्साह और अन्याय के प्रति आक्रोश को पैदा किया जाता है, ताकि क्रांति अपने निश्चित लक्ष्यों को प्राप्त कर सके।

फ्रांसीसी क्रांति में निम्नलिखित दार्शनिकों की भूमिका रही।

1. रूसो - रूसो द्वारा रचित 'सोशल कान्ट्रैक्ट' के लिखे जाने से क्रांतिकारियों में फ्रांस में व्याप्त विलासिता एवं सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ, मजबूत विचार प्रस्तुत किया रूसो ने 'प्राकृतिक न्याय के सिद्धान्त' का वर्णन किया और प्रसिद्ध नारा 'प्रकृति की ओर लौटो' दिया।

2 वाल्तेयर - वह फ्रांस के लिये स्वतंत्र, धर्म सुधार और क्रांति चाहता था। उसके विचारों ने क्रांतिकारियों को प्रेरित किया। उसकी कृतियाँ ए दिप. लेटर्स आन द इंग्लिश

3 मान्टेस्क्यू : फ्रांसीसी क्रांति में इसकी पुस्तक द स्पिरिट आफ लाज' थी। इन्होंने राजनीतिक विचारों एवं सत्ता के -विकेन्द्रीकरण, शक्ति पृथक्करण, -- की बात की।

इन दार्शनिकों के अतिरिक्त जोसे, मोन्टे, दिदरो आदि ने भी फ्रांसीसी क्रांति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

Q.1

A]

B] बाणभट्ट हर्ष के दरबारी कवि थे, जिन्होंने 'हर्षचरित' की रचना की।

C]

D] भारत में संविधान सभा के निर्माण संबंधी प्रस्ताव क्रिप्स मिशन सन 1942 में भारत आया।

E]

F]

G] सिन्धु घाटी सभ्यता से प्राप्त [illegible] स्मारक. उस समय की धार्मिक मान्यताओं को प्रदर्शित करते है।

H] 1. मैक्सी मिलियन रोबोस्पियर फ्रांसीसी क्रांति का 'सर्वाधिक चर्चित एवं रहस्यवादी नायक' रहा है।
2. वह न्यायधीश था. [illegible] जाटल कार्यकर्ता था।

I]

J] भारत स्वतंत्रता अधिनियम 1947 द्वारा 'माउंटबेटन योजना' को वैधानिक रूप दिया गया।
उसके अन्तर्गत भारत और पाकिस्तान दो अधिराज्यों का निर्माण करना था।

K] बालाजी बाजीराव मराठा साम्राज्य के पेशवा (प्रधानमंत्री) थे।
अन्य नाम - नाना साहब के नाम से भी जाना जाता है।